कौटिल्यकालीन एवं आधुनिक भारतीय सामाजिक व्यवस्था

ज्योति कुमारी

आचार्य कौटिल्य उस सामाजिक व्यवस्था को स्वीकार करते हैं जो वर्ण और आश्रम के सिद्धान्तों पर स्थापित थी। सभी दृष्टिकोणों से इस सामाजिक व्यवस्था को वे त्रयी (तीनों वेदों) द्वारा स्वीकृत मानते हैं। आचार्य कौटिल्य की समाज व्यवस्था में राजा सर्वोपरि है। राजा का मौलिक कर्तव्य यह था कि प्रत्येक वर्ण और प्रत्येक आश्रम के लिए त्रयी द्वारा निर्दिष्ट धर्मों का पूर्ण रूप से पालन कराये और समाज के आर्य स्वरूप की रक्षा करें। यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि वह किसी प्रकार संकट या घालमेल घुसने न दें। क्योंकि निश्चित रूप से यह तभी उत्पन्न होता है जब लोग अपने वर्ण या आश्रम के लिए निर्दिष्ट धर्म का पालन नहीं करते। ये निर्दिष्ट धर्म क्या थे? इनके ऊपर प्रकाश डालना आवश्यक है। वेद त्रयी निश्चित रूप से चारों वर्गों और चारों आश्रमों के विभिन्न धर्मों और कर्त्तव्यों को निश्चित करते हैं। ब्राह्मण के धर्म या कर्त्तव्य वेदों का अध्ययन और अध्यापन, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना, मुख्य थे। क्षत्रिय धर्म, वेदों का अध्ययन, यज्ञ करना, दान देना, अपने अस्त्रों के बूते जीवन चलाना (शास्त्राजीव) और अन्य प्राणियों का रक्षण। वैश्य धर्म, वेदों का अध्ययन, यज्ञ करना, दान देना, कृषि कर्म करना, पशुपालन और व्यापार करना शूद्र के धर्म, द्विजों की सेवा करना, वार्ता करना, कारीगरी का कार्य करना और भार की वृत्ति अपनाना। इसके बाद हमें चारों आश्रमों के विवरण मिलते हैं।